एक सच्ची घटना पर आधारित

शीला का फैसला

सुहास कुमार

इस बार जब शीला मां बनने को हुई तो रह रह कर उसे पिछले दो साल की घटना याद आ जाती। उसका मन भय से भर उठता। कहीं इस बार तो फिर उसका बच्चा पैदा होते ही नहीं मर जाएगा?

उसका ब्याह 15 साल की उम्र में हुआ था? एक साल के अंदर ही उसका बच्चा पैदा हुआ। उसकी उम्र उस समय केवल 16 साल की थी। बच्चा बहुत कमज़ोर पैदा हुआ था। उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। दाई ने उसको सांस दिलाने की काफी कोशिश की लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला।

लेकिन शीला एक समझदार लड़की थी। उसने स्वास्थ्य केन्द्र जाकर जो भी जानकारी मिल सकती थी ली। अपने साथ वह अपनी सास को भी ले गई। उनका सहयोग भी जरूरी था।

अब शीला की उम्र 18 साल की हो गई थी। उसे फिर गर्भ ठहर गया। शीला की सास उसका इस बार काफी ध्यान रख रही थी। उसके खाने पीने का, उस पर काम का बोझ न पड़ने देने का भी। शीला ने अपने मन से डर को निकाल दिया। वह खुश रहती। वह पढ़ी-लिखी भी थी। पत्र-पत्रिकाएं पढ़ती। सहेलियों के साथ गपशप भी करती।

हर महीने स्वास्थ्य केन्द्र चेक-अप करवाने भी जाती। उसने टिटेनस का टीका भी लगवा लिया था।

जल्दी ही समय बीत गया। उसके प्रसव का समय नज़दीक आया। दाई को बताई बात के अनुसार उसने बच्चे को पहनाने, उसके बिछाने-उढ़ाने के सब कपड़े अच्छी तरह साबुन से धोकर धूप में सुखा लिए। उसने अपने रहने के कमरे को भी अच्छी तरह साफ़ कर लिया था। उसने वहां साबुन, तौलिया और भी जो-जो चीज़ें बच्चे के जन्म के समय चाहिए होती हैं उनका इंतज़ाम कर लिया था। नाड़ू किट भी रख लिया था।

जब शीला को दर्द शुरू हुए तो उसकी सास ने दो-तीन घंटे इंतज़ार किया, कहीं दर्द झूठे तो नहीं हैं? जब उनका समय कम और दौरान बढ़ने लगा तो उन्होंने दाई को बुला भेजा। दाई ने आते ही साबुन के घोल का एनीमा शीला को दिया। उससे दर्द बढ़े। दाई ने उसको थोड़ा बहुत चलने-फिरने और लंबी-लंबी सांस लेने को कहा। कुल आठ घंटे की प्रसव पीड़ा के बाद शीला ने एक बच्ची को जन्म दिया।

शीला ने पहले हो अपनी सास से कहा था कि चाहे बेटा हो या बेटी, मैं बराबर से ही खुशी मनाऊंगी। उसने अपनी मां से भी कहा था कि तुम जो भी रस्म-रिवाज़ करो बेटी होने पर भी करना। और उन्होंने वैसा ही किया। शीला की इच्छा के हिसाब से उसकी सास ने थाली भी बजाई।

बच्चे को हल्के गरम पानी से नहलाकर दाई

ने नरम कपड़े से थप-थपाकर बच्चे को सुखाया। बच्चे की नाल को 'नाड़ू किट' से नया ब्लेड निकाल कर काटा। दाई बच्चा तोलने का कांटा भी लाई थी। बच्ची का वज़न 2 किलो 20 ग्राम था। दाई ने बताया कि वह ठीक है।

शीला को कुछ ज़्यादा खून जा रहा था। दाई ने उसकी खाट के पैरों की तरफ ईंटे रखकर खाट ऊंची कर दी ताकि पैर ऊपर की तरफ रहें। उसने कहा अगर चार घंटे में खून बहना कम नहीं हुआ तो उसे अस्पताल ले जाना पड़ सकता है। उसने बच्ची को शीला के पास लिटा दिया और दूध पिलाने को कहा। शीला ने कहा अभी तो दूध भी नहीं उतरेगा। दाई ने कहा "दूध न सही मगर अभी जो भी द्रव निकलेगा बच्ची को फायदा करता है। उससे उसका पेट साफ होगा और उससे बीमारी से लड़ने की भी ताकत आती है। इन सबके अलावा बच्चेदानी के सिकुड़ने में भी इससे मदद मिलती है।" दाई ने शीला को एक सुई भी लगाई। धीरे-धीरे उसका खून जाना कम हो गया। दाई ने कहा "अब कोई खतरा नहीं है।"

शीला की सास दाई की होशियारी से बहुत खुश हुई और फीस के सिवा उसे साड़ी भी इनाम में दी। शीला को भी मन में बड़ा संतोष हुआ कि सब ठीक से हो गया। उसने जो सोचा था सब वैसे ही हुआ। उसकी सास ने गाना बजाना भी करवाया। मोहल्ले में लड्डू भी बंटवाए। शीला की खुशी और उत्साह देखकर घर में सभी बड़े खुश दिखाई दे रहे थे। ऐसा नहीं लग रहा था कि बेटी के जन्म पर कुछ कम खुशी है।

□